अर्स दिल मोमिन जो, जे पसे अर्स मोमिन।
चाहिए कोठियां हक अर्समें, त तो पेरो न्हाए ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल ही अर्श है। मोमिन ही परमधाम को देखते हैं। जब श्री राजजी महाराज मोमिनों को परमधाम बुलाते हैं तो उनके संसार के तन पहले ही छूट जाते हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, धणिएं पूरी केई खिल।
पिरी पसो या रांद के, हक बेठो अर्स तो दिल।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने पूरी हंसी की है। अब खेल को देखो या धनी को देखो। श्री राजजी महाराज तुम्हारे दिल को अर्श करके बैठे ही हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ४९३ ।।

हुकमजी पेहेचान

ताडो कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिंनी सभ तो।
बेठा आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो।। १ ।।

न ताला है, न कुंजी है, न कोई दरवाजा खोलना है। यह बात आपने समझा दी है। आप मेरे दिल में ही आकर बैठ गए हैं। अब जैसे जानो वैसे मुझे मिलो।

सेहेरग से ओडडो, आडो पट न द्वार।
उघाड़िए अंख समझजी, डिसंदी न डिसे भरतार।। २ ।।

आपने अपना ठिकाना सेहेरग से नजदीक बताया है। जिसके बीच न कोई दरवाजा है, न परदा है। आपने हमारी समझ की आंखें खोल दी हैं। जिससे देखते हुए भी, हे धनी! मैं आपको नहीं देख पा रही हूं।

हुकम इलम खेल हिकडो, ब्यो कोए न कितईं दम।
हित रूह न कांए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम।। ३ ।।

यह खेल हुकम और इलम का है। यहां दूसरा कुछ भी नहीं है। यहां किसी की रूह आई ही नहीं है। जो कुछ हुआ है, सब हुकम से हुआ है।

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम।। ४ ।।

हमारी सुरता हुकम से ही है। खेल भी हुकम दिखा रहा है। यह त्रिदेव भी आपके हुकम के तले खड़े खेल दिखा रहे हैं।

जे अरवाएं अर्स जी, से सभ हकजी आमर।
असां हुज्जत गिडी अर्स जी, अग्यां बेठ्यूं हक नजर।। ५ ।।

हम जो परमधाम की रूहें हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही हुकम के अधीन हैं। हमने भी परमधाम का दावा ले रखा है, जबकि हम मूल-मिलावे में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

अरवा असां जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर।
असीं डिसूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर।। ६ ।।

हमारी सुरता हुकम के अधीन हैं। गुण, अंग, इन्द्रियां भी हुकम की है। मैं जो देखती हूं सब हुकम है। यह हुकम ही परदा डालकर खेल दिखला रहा है।

Nijanand App

हित अचे अरवा अर्स जी, त उडे चौडे तबक।
हुकमें नाम धरायो रूहन जो, हे हुकम केयो सभ हक।।७।।

यहां परमधाम की रूहें आएं, तो यह चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड ही उड़ जाएगा। यहां हुकम ने ही हम रूहों का नाम रखा है और धनी के हुकम ने ही सब कुछ किया है।

कूड न अचे अर्स में, रूह माधा न रहे कूड दम।
न्हारयम अंतर मंझ बाहेर, कित जरो न रे हुकम।।८।।

परमधाम में झूठ आ नहीं सकता। रूहों के सामने एक पल भर के लिए भी झूठ का ब्रह्माण्ड खड़ा रह नहीं सकता। इसे अन्दर-बाहर से देखा तो हुकम के बिना कुछ भी नजर नहीं आया।

डिठो डिखारयो हुकमें, असीं थेयां हुकम।
न्हाए न थ्यो न थींदो, कीं धारा हुकम खसम।।९।।

हुकम ने ही हमें खेल दिखलाया है। हुकम से ही हमने देखा है। हम भी हुकम से ही बने हैं। यह झूठा संसार न था और न हुकम के बिना होगा।

हुकमें डिखारयो हुकम के, ते हुकमें डिठो हुकम।
भिस्त दोजख थेई हुकमें, आखिर सुख थेयो सभ दम।।१०।।

हुकम ने ही खेल दिखाया है और हमारी रूहों के तन जो हुकम के स्वरूप हैं, खेल देख रहे हैं। बहिश्त और दोजख भी सब हुकम से होती हैं। आखिरत में सब जीवों को बहिश्तों के सुख मिलने हैं।

नाला रूहें फरिस्ते जा, धरया हक आमर।
पुंना पांहिजी निसबतें, हुकमें पुजाया उपटे दर।।११।।

श्री राजजी के हुकम ने ही हम रूहों का और फरिश्तों का नाम रखा है। हमें फिर अपने सम्बन्ध के अनुसार ही दरवाजा खोलकर अपने-अपने घर पहुंचाया।

असीं उथी बेठां अर्समें, असां के हुकमें डिंनों याद।
हुकमें हुकम खेल डिखारियो, हुकमें हुकम आयो स्वाद।।१२।।

हम परमधाम में उठकर बैठ गए, जब हुकम ने हमें परमधाम की याद दिलाई। हुकम ने हुकम को खेल दिखलाया। हुकम से ही हुकम को स्वाद मिला।

हे बारीक गाल्यूं हुकम ज्यूं, हुकम थेयो सभमें हक।
असीं अर्समें सिर गिंनी करे, केयूं गाल्यूं बेसक।।१३।।

यह हुकम की बारीक बातें हैं। सबके अन्दर हुकम समाया है। हमने परमधाम में अपने सिर पर हुकम लेकर यह सब बातें की हैं।

असां अर्स न छड्यो, धारा थेयासीं बेसक।
रूहें न आयूं रांदमें, असां चई गाल मुतलक।।१४।।

हमने परमधाम को नहीं छोड़ा और परमधाम से अलग भी हुए। रूहें खेल में आई नहीं हैं और खेल की बातें भी हम घर उठने पर करेंगी।

Nijanand App

हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवत में घर।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर।। १५ ।।

यह सब कारीगरी हुकम की है। घर में मूल-मिलावा में बिठाकर खेल दिखलाया। परमधाम की बातें तथा श्री राजजी के दिल की गुझ (गुह्य) बातें भी खेल में बताईं।

गाल्यूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मय खिलवत।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत।। १६ ।।

अब खेल की सब बातें मूल-मिलावा में होंगी और खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे। जिस तरह से परमधाम के सुख खेल में लिए हैं, वैसे ही खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे।

असां न छड्यो अर्स के, रांदमें पण आयूं।
थेयो विछोडो अर्समें, रांदमें पण न आयूं।। १७ ।।

हमने परमधाम नहीं छोड़ा और खेल में भी आये। परमधाम से वियोग भी हुआ और खेल में आये भी नहीं।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे।
कारण वाद इस्क जे, डिंनाऊं बए हंद डिखारे।। १८ ।।

यह सब हिकमत हुकम की है, जो तरह-तरह से काम करता है। इश्क रब्द के कारण ही हमें दोनों ठिकाने दिखलाए।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणी वडो कादर।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी साहेबी अच्छी तरह से दिखलाई। श्री राजजी महाराज की बड़ाई कैसे कहूं? मेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, पांण के बिहारे तरे कदम।
खिल्ल कंदा वडी अर्समें, जा केई हुकम इलम।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपने को चरणों के तले बिठाकर हुकम और इलम ने परमधाम में हमारी बड़ी हंसी उड़ाई।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ५१३ ।।

हक हादी रूहोंजी सिफत

कांध रूह भाईयां सिफत करियां, तोहिजी हित थिए न सिफत किएं केई।
से न्हारयम जडे बेवरो करे, आंऊं उरझी ते में रही।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी रूह चाहती है कि मैं आपकी सिफत करूं। आपकी सिफत यहां कोई नहीं कर सकता। जब मैं विचार करके देखती हूं तो स्वयं इसमें उलझ जाती हूं।

हे दिलजी गाल के से करियां, रुहजी तूं जांणे।
कुछण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणे।। २ ।।

यह दिल की बातें किससे कहूं? मेरी रूह की आप सब जानते हो। कहने के लिए अब कुछ बाकी रहा ही नहीं। हे धनी अब जैसा कहो वैसा करें।

Nijanand App